फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 131
मई 1999

काम कम । बातें ज्यादा।।

नौकरी-चाकरी के अनकहे पहलू

प्रचलित माहौल ऐसा है कि रोटी नहीं मिलेगी अगर हम नौकरी नहीं करेंगे। बचपन सिमट गया है चाकरी के लिये तैयारी में। नौकरी पाने के लिये प्रयास युवावस्था की मुख्य गतिविधि बन गये हैं। सर्विस में बने रहने की कोशिशें बाकी जीवन को झकझोरती रहती हैं। रिटायरमेन्ट मौत के समान है। " अच्छी नौकरी" की आशा- निराशा में डुबकियाँ हमारे जीवन के आदि और अन्त बन गये हैं।

पैसा , हाय पैसा

प्रचलित माहौल खरीद और बिक्री का है। अनाज , कपड़े , प्लाट - मकान की तरह हम भी वस्तु हैं। मंडी में हमारा भाव लगातार लगता है , घटता- बढता रहता है।" कितने में बिकता- बिकती है" यह व्यक्ति को मापने का पैमाना है। पैसा हमें नचाता है। बहुत- बहुत बातें होती हैं पैसों के बारे में।

कैद के दायरे

हर रोज दिहाड़ी के लिये भटकने की बजाय महीने- भर की निश्चित नौकरी के लिये कोशिशें स्वाभाविक लगती हैं। हर तीन- चार महीने बाद चाकरी की तलाश में चक्करों की जगह परमानेन्ट सर्विस के लिये हाथ- पैर मारने नेचुरल लगते हैं। ज्यादा पैसों के लिये प्रयास सहज लगते हैं।

तीस बरस लगातार खटने की इच्छा के पीछे छिपे होते हैं : सर्विस- ग्रेच्युटी और प्रोविडेन्ट फन्ड के पैसों से प्रियजनों- निकटजनों के प्रति जिम्मेदारियाँ पूरी करने की आशायें तथा बाकी बचे दिन चैन से काटने के सपने।

प्रचलित माहौल ऐसा है कि समाज में हमारे मान- सम्मान और अपमान- निरादर का निर्धारण हमारी दिहाड़ी की मात्रा के इर्द- गिर्द होता है। ऐसे में कम वेतन हो तो उसके बारे में बताना नहीं अथवा झूठ- मूठ में ज्यादा बताना स्वाभाविक लगता है। अपने से अधिक तनखा वालों के सामने झुकना और अपने से कम तनखा वालों पर रौब- दाब झाड़ना नेचुरल लगता है।

अपनी परेशानियों- दिक्कतों- बदहाली के बारे में पड़ोसियों तक से बात करने में डर लगता है। अपनी तकलीफ किसी को बताने पर खिल्ली उडाये जाने , हेय दृष्टि से देखे जाने , बेचारगी को भुना कर तकलीफ बढा देंगे के खतरे प्रचलित माहौल में दिखते हैं। गरीबी , कमजोरी , गलती के मजाक उड़ाने के आचार- विचार हावी हैं। इस उल्टी नैतिकता के दबदबे में हम अपने में सिकुड़ते जाते हैं और हमारी तकलीफें बढती जाती हैं।

बेनकाब काम

साहब देख रहे हैं – देख सकते हैं – सुन रहे हैं – कोई बता देंगे – पता चल जायेगा का मनहूस वातावरण तन को तानने और मन को मारने के लिये प्रत्येक वेतनभोगी की नियति है।

लोहा काटते हों चाहे प्लास्टिक मोल्ड करते हों , घाव पर पट्टी करते हों चाहे कक्षा में पाठ पढाते हों , कपड़ा बुनते हों चाहे नट- बोल्ट कसते हों , बिल बनाते हों चाहे नाप तोल करते हों , कम्प्युटर पर काम करते हों चाहे टी वी पर समाचार पढते हों – प्रत्येक कार्यस्थल पर विभिन्न प्रकार का सुपरविजन- निरीक्षण- नियन्त्रण- कन्ट्रोल कार्य करने वालों को महीन- सूक्ष्म- सलीके की शैली से ले कर भोथरे, हथौड़ा टाइप चोटों से जलील करता है।

— टाइम पर पहुँचने- टोकन- पंचिंग कार्ड- रजिस्टर में हाजरी- गेट- सेक्युरिटी दौड़ाते हैं शरीर को और तनावों में झोंकते हैं मन को।

— प्रोडक्शन कोटा , निर्धारित लक्ष्य और डेड लाइन घड़ी की सूइयों तथा कैलेन्डरों की तारीखों को सिर- माथे पर सवार कराते हैं।

— अधिक से अधिक तथा तीव्र से तीव्रतर काम और क्वालिटी में लगातार सुधार के लिये दबाव तन व मन को ताने रखते हैं।

— बोझिल और उबाऊ काम तथा पाबन्दियाँ तन- मन को तिल- तिल जलाते हैं। जलील होने और जलील करने का अनन्त सिलसिला है।

— अनुशासन और अनुशासनात्मक कार्रवाई के डर तथा नौकरी की अनिश्चितता से जुड़े तनाव तन- मन को छलनी करते हैं।

— थकावट से चूर तन- मन के लिये फैक्ट्री से निकलते समय गेट पर तलाशी और दफ्तर में छापे के वक्त की जलालत बोनस हैं।

बातें काम की काम की बातें

मैटेरियल प्रोडक्शन में कार्यरत हों चाहे ज्ञान उत्पादन की फैक्ट्री में लगे हों , सेल्स- मार्केटिंग- एडवरटाइजिंग में हों अथवा ट्रेनिंग- चौकीदारी में या फिर पुलिस- फौज में — ड्युटी के दौरान के हर रोज के कष्ट और अपमान के बारे में कार्यस्थल से बाहर चर्चायें हम कम ही करते हैं। इससे होता यह है कि पैसा कमाने के लिये क्या- कुछ झेलना पड़ता है यह हमारे बीच व्यापक चर्चा का विषय नहीं बनता। " पैसों से कुछ भी खरीद सकते हो" तो खूब कहा जाता है पर पैसों के लिये निचुड़ते तन और छलनी होते मन पर पर्दे पड़े रहते हैं।

ऐसे में अपमान- जलालत- कष्ट लिये प्रचलित माहौल के मुताबिक स्वयं को ढालने के लिये हम खुद को और तकलीफ देते हैं। इतना ही नहीं , अपने निकटजनों- प्रियजनों को भी प्रचलित माहौल के अनुसार ढालने में हम कोई कसर नहीं छोड़ते।

क्या यह बेहतर नहीं होगा कि बेहतर जीवन के लिये प्रचलित माहौल पर प्रश्न उठायें ? काम की वास्तविक हालात पर चर्चायें यह सवाल उठाने के लिये उपयुक्त नहीं हैं क्या ? रोज- रोज के कष्ट और अपमान के स्थलों, कार्यस्थलों की निर्मम वास्तविकता पर व्यापक चर्चाओं द्वारा प्रचलित माहौल को कटघरे में खड़ा करने से अधिक उपयुक्त और कोई चीज है क्या ? अपने काम के बारे में चर्चाओं के लिये उल्टी नैतिकता के जहर से पिन्ड ही तो छुड़ाना है।

वेतन- भेद पर गर्दन नीची करने अथवा छाती तानने वाली विभाजनकारी यन्त्रणाओं के स्थान पर लेबर- मजदूर- श्रमिक- कामगार- वरकर- इम्पलाई- कर्मचारी की कार्यस्थलों की निर्मम वास्तविकता पर बातचीतें क्या विभिन्न प्रकार के सुखद जोड़ नहीं लिये हैं ?

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

वास्तविकता की एक झलक

मोडर्न इंजिनियरिंग मजदूर : "5-10 साल से काम कर रहे वरकर कैजुअल हैं। हरियाणा सरकार द्वारा तय न्यूनतम वेतन नहीं देते, ग्रेड नहीं देते। हमें ई. एस. आई. कार्ड भी नहीं दिये हैं।"

जगसन पाल फार्मास्युटिकल वरकर : "मार्च की तनखा में भी डी.ए. के पैसे नहीं दिये जबकि कई कम्पनियों में दे दिये गये हैं। आठ-दस साल से काम कर रहे मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने परमानेन्ट नहीं किया है, उन्हें कैजुअल ही रखा है।"

नेपको बेवल गियर मजदूर : "मार्च का वेतन 18 अप्रैल को जा कर दिया है। दो साल का बोनस नहीं दिया है। तीन साल के ओवर टाइम काम के पैसे बकाया हैं और मैनेजमेन्ट जबरन ओवर टाइम काम के लिये रोकती है – जो वरकर ओवर टाइम के लिये मना करते हैं उनकी जबानी ले-ऑफ लगा देते हैं।"

ई एस आई-मैनेजमेन्ट-एक्सीडेन्ट

मैं 25. 2. 99 को **राजू इंजिनियरिंग वर्क्स**, 22-ए इन्डस्ट्रीयल एरिया में नौकरी पर लगा था। फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट में 5. 3. 99 को मेरी उँगली कट गई। मैनेजमेन्ट ने मेरा ई एस आई कार्ड बनवाया और ई एस आई में मेरा इलाज हुआ।

हफ्ते-हफ्ते बाद मैं ई एस आई डॉक्टर का मेडिकल सर्टीफिकेट ई एस आई लोकल आफिस में जमा कराता रहा पर वहाँ से मुझे कोई पैसे नहीं दिये गये। पूछने पर कहते कि एक्सीडेन्ट रिपोर्ट पास हो कर नहीं आई है। मैंने ई एस आई रीजनल आफिस के भी चक्कर काटे। दो महीने हो गये हैं पर ई एस आई से मुझे मेडिकल छुट्टियों का एक पैसा भी नहीं मिला है। पता नहीं उंगली कटने का भी कुछ देंगे कि नहीं।

पैसे की बहुत तँगी में हालात बता कर मैंने मैनेजमेन्ट से खर्च चलाने के लिये पैसे माँगे। इस पर साहब बोले कि उन्होंने पहले ही मेरे ऊपर बहुत खर्च कर दिया है – 1500 रुपये ई एस आई में लगा दिये। "अब इलाज के दौरान पैसे देने की जिम्मेदारी ई एस आई की है, कम्पनी कुछ नहीं देगी"। मैंने 25 फरवरी से 5 मार्च तक जो काम किया था उसके पैसे भी मुझे नहीं दिये।

इलाज पूरा होने पर ई एस आई डॉक्टर ने 28 अप्रैल को मुझे फिटनेस सर्टीफिकेट दिया। मैं फैक्ट्री गया और वहाँ फिटनेस पेपर दे कर ड्युटी पर लेने को कहा तो साहब बोले कि यहाँ वरकर पूरे हैं, तुम कहीं और काम देखो। ई एस आई डॉक्टर का फिटनेस सर्टीफिकेट देने पर मुझे ड्युटी पर लेने से कम्पनी ने इनकार कर दिया।

30.4.99 — वेद प्रकाश

राजू इंजिनियरिंग वर्क्स का मजदूर

डी एच डब्लू कैसल्स इन्टरनेशनल कारपोरेशन वरकर : "डी. ए. नहीं देते। कुछ मजदूरों को ई.एस.आई. कार्ड और फन्ड की स्लिप भी नहीं देते। इस कम्पनी का एक दूसरा प्लान्ट है और उसमें तो किसी भी वरकर को मैनेजमेन्ट ने ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिया तथा न ही किसी को फन्ड की पर्ची दी है।"

अलपिया पैरामाउन्ट मजदूर : "सैक्टर 25 के प्लाट नम्बर 60 की इस फैक्ट्री में 600-700 वरकर हैं। रोज 12 घन्टे की ड्युटी लेते हैं, कोई छुट्टी नहीं देते और बदले में देते हैं महीने के 1500 रुपये।"

सुपर आयल सील वरकर : "मार्च की तनखा आज 19 अप्रैल तक नहीं दी है।"

क्लच आटो मजदूर : "परमानेन्ट की जगह कैजुअल वरकरों से मशीनें चलवाते हैं। लालच दे कर कैजुअलों से ज्यादा तेज काम करवाते हैं। ऐसे में कई कैजुअल मजदूरों के हाथ कट जाते हैं।"

टेकमसेह मजदूर : "अभी सीजन है। मैनेजमेन्ट को उत्पादन ज्यादा से ज्यादा चाहिये। इसलिये मैनेजमेन्ट ने 550 कैजुअल वरकर भी भर्ती कर लिये हैं। अब रोज 2900 से ज्यादा ही कम्प्रेसर बन रहे हैं। एग्रीमेन्ट के बाद कम उत्पादन के नाम पर वेतन काटने का जो सिलसिला मैनेजमेन्ट ने शुरू किया था वह भी बन्द कर दिया है। लेकिन यह सब टेम्परेरी बातें हैं। सीजन खत्म होते ही मैनेजमेन्ट कैजुअलों को हटा देगी और तभी हमें भी बल्लभगढ प्लान्ट में शिफ्ट करेगी। शिफ्ट करने के समय लफड़े करके मैनेजमेन्ट बड़ी संख्या में परमानेन्ट मजदूरों को नौकरी से निकालने की कोशिश करेगी। एग्रीमेन्ट में और उसके बाद लीडरों की ड्रामेबाजी हम देख चुके हैं। अपनी नौकरियाँ बचाने के लिये हमें खुद ही कदम उठाने होंगे और हम उठायेंगे।"

स्ट्डस लिमिटेड मजदूर : "एक तरफ तो मैनेजमेन्ट कहती है कि काम नहीं है और दूसरी तरफ मीटिंग में ज्यादा उत्पादन माँगती है। पैसे की समस्या दिखाते हैं जबकि सब माल बिक जाता है, कोई स्टॉक में नहीं है। दरअसल मैनेजमेन्ट ने वी आर एस लगाई है और मजदूरों को नौकरी छोड़ने के लिये 'तैयार' करने के वास्ते माहौल बना रही है। यह-वह आरोप लगा कर मजदूरों को निकालना शुरू किया हुआ है।"

पोलर इन्डस्ट्रीज वरकर : "ई. एस. आई. के नाम से 33 रुपये वेतन में से काटते हैं पर कार्ड नहीं देते। एक्सीडेन्ट होने पर भी ई. एस. आई. कार्ड नहीं देते। प्राइवेट में एक-दो दिन इलाज करा देते हैं और दो-तीन दिन की छुट्टी भी दे देते हैं। लेकिन उँगली कटे वरकर को रखते नहीं हैं – ठीक होने के बाद पाँच-सात दिन ड्युटी करवाने के बाद निकाल देते हैं।"

कैजुअल वरकर : "परमानेन्ट के लिये **एस्कोर्ट्स** में जहाँ 37 पीस निर्धारित हैं वहाँ कैजुअलों से 50 तक बनवाते हैं। डरा कर ज्यादा काम करवाते हैं – कहते हैं कि इतना प्रोडक्शन निकालो नहीं तो कल से ड्युटी मत आना। ज्यादा तेज काम करने की वजह से एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं। छोटी-मोटी चोटें तो लगती ही रहती हैं, उँगलियाँ भी कइयों की कट जाती हैं। जिस वरकर की उँगली कट जाती हैं उसे बाहर कर देते हैं।"

सेवा इन्टरनेशनल मजदूर : "पेमेन्ट टाइम पर नहीं देते। मार्च का वेतन 16 अप्रैल को दिया। पे-स्लिप नहीं देते और कुछ वरकरों को तो ई.एस.आई. कार्ड भी नहीं दिये हैं। प्रोडक्शन कम के नाम पर मैनेजमेन्ट तनखा में से कभी 300 तो कभी 400 रुपये काट लेती है। ओवर टाइम काम के पैसे दो-दो महीने नहीं देते।"

एस.पी.एल. वरकर : "कैजुअलों को 1500 और ठेकेदारों के मजदूरों को 1200 रुपये देते हैं। 12 घन्टे की ड्युटी है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। फन्ड की स्लिप भी नहीं मिलती। मैनेजमेन्ट कम्पनी का नाम बदली रहती है – कभी शिवालिक प्रिन्ट लिमिटेड तो कभी एस पी एल इन्डस्ट्रीज और कभी शिवालिक लिमिटेड।"

अतुल ग्लास मजदूर : "17 अप्रैल हो गई है और मैनेजमेन्ट ने मार्च की तनखा नहीं दी है।"

के जी खोसला कम्प्रेसर वरकर : "3000 से 900 मजदूर तो कर ही दिये थे, अब एक साल से फिर वी आर एस लगा रखी है। डिपार्टमेन्ट बदल कर, यहाँ से बाहर भेज कर परेशान कर रहे हैं ताकि नौकरी छोड़ दें।"

बाटा फैक्ट्री मजदूर : "25 फरवरी को मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी की थी। दो महीने से ऊपर हो गये हमें बाहर किये। हर वरकर का 10-12 हजार रुपयों का नुकसान तो हो चुका है। तालाबन्दी से पहले मैनेजमेन्ट और लीडरों की मीटिंग चल रही थी। तालाबन्दी के बाद से भी हम तो मीटिंग चल रही हैं की बातें ही सुनते आ रहे हैं। पता नहीं ऐसी कौनसी बातें हैं कि इतनी मीटिंगों के बाद भी खत्म नहीं हुई हैं। लक्षण तो पहले दिन से ही गड़बड़ के हैं। कुछ ज्यादा ही कड़वा पक रहा है।"

जे एम ए इन्डस्ट्रीज वरकर : "चार जनरेटर बेच दिये हैं। बगल वाला प्लान्ट भी बेच दिया है। और आज 17 अप्रैल तक भी मैनेजमेन्ट ने हमें मार्च का वेतन नहीं दिया है।"

धीरे काम करो

थोड़ी फुरसत में हुई बातचीत

व्हर्लपूल वरकर :

" आजकल बात- बात में मिठाई बाँट कर मैनेजमेन्ट फिर जहर की सुई लगाने की तैयारी कर रही है। बदलावों का ऐसा सिलसिला चल रहा है कि फ्रिज बनाने वाले मजदूरों के संग- संग फ्रिज खरीदने वालों के हितों की बलि ली जा रही है ताकि कम्पनी फलफूल सके।

" पहले आर बी आई पद्धति के फ्रिज बनाते थे जिनके हर पार्ट की मरम्मत हो सकती थी। एक बार खरीद लिया तो 20 साल छुट्टी। हर पार्ट नट- बोल्ट से जुड़ते थे और मजदूर काफी संख्या में लगते थे।

" कम्पनी ने पफ सिस्टम शुरू किया। इसमें मरम्मत की गुँजाइश कम है क्योंकि अधिकतर काम आटोमैटिक मशीनों से होता है। खराब हो जाये कुछ तो पूरे को फेंको। यूज एण्ड थ्रो में कम्पनी की चाँदी ही चाँदी है।

" पफ सिस्टम में रोल फोरमर और डोर मेटल लाइन जैसी आटोमैटिक मशीनें लगी जिनमें 16 की जगह 1 मजदूर की नौकरी थी। पफ ने 2075 वरकरों की नौकरियाँ खाने में मुख्य भूमिका अदा की।

" डिपार्टमेन्टें बन्द करना , बाहर काम करवाना और वर्क लोड में भारी वृद्धि संग- संग चले हैं।

" इधर ओपेरा पता नहीं क्या नाच नचायेगा। इटली से लाये गये दो मॉडल अभी ट्रायल में हैं। कम्पनी के अनुसार अभी यहाँ 74 मैनेजर , 204 एग्जेक्युटिव- टेक्निशियन , 46 क्लर्क , 1908 परमानेन्ट मजदूर और 390 कैजुअल वरकर हैं। एक बात तो साफ है : ओपेरा अपने साथ बड़े पैमाने पर मजदूरों की छँटनी लाया है — मात्र 700- 800 मजदूरों की आवश्यकता रह जायेगी।

" मैनेजमेन्ट के अनुसार व्हर्लपूल की पान्डिचेरी फैक्ट्री में 195 **कुशल मजदूर** हैं , रँजनगाँव (पुणे) फैक्ट्री में 221 **कुशल मजदूर** हैं और फरीदाबाद फैक्ट्री में 1908 **मजदूर** व 390 कैजुअल मजदूर हैं। कहीं ' कुशल मजदूर' कहना और कहीं सिर्फ 'मजदूर' कहना ..... लगता है कि ओपेरा के साथ फरीदाबाद में भी **कुशल मजदूर** हो जायेंगे , यानि , हम 700- 800 ही रह जायेंगे। इधर मैनेजमेन्ट ने 46 क्लर्कों को पहले जुनियर एग्जेक्युटिव- जुनियर इंजिनियर और फिर चटपट एग्जेक्युटिव - इंजिनियर का लेबल लगा कर पता नहीं क्या खिचड़ी पकाई है।

" इस समय धकाधक प्रोडक्शन हो रहा है। 2800- 2900 फ्रिज रोज बन रहे हैं और फिर भी मैनेजमेन्ट कहती है कि कम हैं। लो लड्डु लो और तन को थोड़ा और तानो !

अभी मैनेजमेन्ट हमें छेड़ नहीं रही पर सितम्बर दूर नहीं है। मैनेजमेन्ट इस साल के अन्त से पहले मजदूरों व स्टाफ के 1500 लोगों को निकालने के लिये पूरा जोर लगायेगी। इसके लिये अभी से मीटिंग पर मीटिंग हो रही हैं।

" जिन 2075 को मैनेजमेन्ट नौकरी से निकाल चुकी है उनकी दुर्गत देख कर हम यही सोचते रहते हैं कि इस बार की छँटनी को कैसे रोकें। लीडरों ने पहले भी छँटनी करवाने में सहयोग दिया था और इस बार भी वही करेंगे — एग्रीमेन्ट में लिख तक दिया है यह। हम मजदूरों को और स्टाफ के लोगों को खुद ही कदम उठाने होंगे।"

हाई पोलीमर लैब्स मजदूर :

" इस फैक्ट्री में 24 घन्टे एक्सीडेन्ट का खतरा रहता है। आये दिन आग लगती रहती है। गैस और तेजाब लीक होते रहते हैं।

" 29 अप्रैल को लैब नम्बर दो में ए.सी. का कम्प्रेसर फटने पर कारीगर की तो मौके पर ही मौत हो गई थी और इंजिनियर बुरी तरह घायल हो गया था। यह लोग ओखला की किसी कम्पनी से मेन्टेनैन्स का काम करने आये थे। नाम नही मालुम क्योंकि मैनेजमेन्ट ने एक्सीडेन्ट स्थल पर फैक्ट्री के मजदूरों को जाने ही नहीं दिया। दिन के दो बजे के करीब बहुत जोर का धमाका हुआ तो वरकर उधर दौड़े पर रास्ते में पड़ते गेट पर डायरेक्टरों - मैनेजरों - सुपरवाइजरों ने मजदूरों को रोक दिया था।

"हाई पोलीमर लैब्स मैनेजमेन्ट की गुण्डागर्दी इस कदर की है कि जनवरी में मँहगाई आँकड़े के जो 172 रुपये आये हैं उन्हें देने से साफ- साफ मना कर रही है। मैनेजमेन्ट कहती है कि डी.ए. के तौर पर यह पैसे नहीं देगी बल्कि किसी अलाउन्स में जोड़ देगी। डी.ए. के 172 रुपये नहीं देने के विरोध में इसी मैनेजमेन्ट की सैक्टर 25 में ही प्लाट नम्बर 72 स्थित फैक्ट्री के मजदूरों ने तो मार्च का वेतन अप्रैल- अन्त तक भी लेने से इनकार किया हुआ है। प्लाट नम्बर 6- 7- 8 स्थित फैक्ट्री में हमने 172 रुपये डी. ए. के मामले को लटकते छोड़ कर वेतन ले लेना ठीक समझा है — पेंच कसने हम जानते हैं।"

झालानी टूल्स वरकर :

" फैक्ट्री के अन्दर मजदूरों की पिटाई द्वारा दहशत का माहौल बना कर वरकरों के 40 करोड़ रुपये हड़पने के लिये मैनेजमेन्ट ने जून 98 में जो कमेटियाँ बनाई थी उन्हें 30 दिसम्बर 98 को भूतपूर्व सीटू लीडरों ने एच एम एफ की कमेटियाँ घोषित कर दिया था। लूट में हिस्सा- पत्ती के लिये सीटू और एच एम एफ के झगड़े में 29 मार्च को फस्ट प्लान्ट के रामलखन की मृत्यु हो गई। एच एम एफ के लीडर ने 9 अप्रैल को घोषणा की कि कत्ल के केस का खर्चा मजदूरों से लेंगे और पहली किस्त के तौर पर हर मजदूर के वेतन में से सौ- सौ रुपये लेंगे। मैनेजमेन्ट ने फरवरी 99 माह का काटा- पीटा वेतन 15 अप्रैल को देना शुरू किया और कम्पनी के कैशियरों ने हर वरकर के वेतन में से एक सौ दस रुपये काट लिये — पर्ची दस रुपये चन्दे की डाली तथा 10 रुपये लिफाफे पर लिखे। सौ रुपये लेने की घोषणा के दूसरे दिन से ही बीस- पच्चीस साल के 15- 20 दाढीवाले फिर प्लान्टों में चक्कर लगाने लगे — यह लोग झालानी टूल्स के मजदूर नहीं हैं और 29 मार्च की हत्या के बाद गायब हो गये थे। सौ- सौ रुपये लेने की घोषणा के साथ ही सुस्त पड़ गये कमेटियों वाले भी फिर गिरोह बना कर प्लान्टों में घूमने लगे हैं। .... स्टोर में कुछ नहीं मिलता — एक नट- बोल्ट के लिये मशीन बन्द हो जाती है। कभी मात्र दो हैमर चलते हैं तो कभी तीन और कभी बिलकुल ही बन्द रहते हैं।"

एस्कोर्ट्स मजदूर :

" मैनेजमेन्ट का रवैया आजकल देखने में बहुत खराब लगता है , ऊट- पटाँग लगता है। जब चाहे तब कोई मैनेजर अब वरकर को कह देता है : ' गेट देखा है ? बाहर जाना है क्या ?' ड्युटी पर उपस्थित होने पर भी मैनेजर अनुपस्थित लगा देते हैं — हाजरी क्लर्क और सुपरवाइजर द्वारा लिख कर देने पर भी एक नहीं सुनते। निर्धारित प्रोडक्शन करने के बाद भी कई जगह बैठना तक दुर्लभ किया हुआ है। हालात ऐसे बना दिये हैं कि अब आपस में ज्यादा बात भी नहीं हो पाती ! कैजुअलों के साथ जैसा सलूक करते हैं वैसा ही परमानेन्ट के साथ करने का रवैया अपनाया जा रहा है।

" शिफ्टिंग चल रही है। यह सब बी पी आर के तहत ही हो रहा है। कई जगह लाइन सिस्टम पूरा बन गया है। प्लानिंग यह है कि सब जगह लाइन सिस्टम हो और जहाँ कनवेयर चाहिये वहाँ कनवेयर लगे। लाइन सिस्टम के लिये मशीनों में परिवर्तन पर बहुत खर्चा कर रहे हैं पर ज्यादातर पेन्टिंग और लाइट- वाइट का डेकोरेशन मात्र हो रहा है — दुल्हन बना रहे हैं। कम्प्युटर सिस्टम में भी बदलाव कर रहे हैं। कम मशीनों से अधिक उत्पादन के लिये मोडिफिकेशन किये जा रहे हैं। बी पी आर के जरिये बहुत मजदूर निकालने की योजना है और इसी के लिये मैनेजमेन्ट फिर माहौल बनाने में जुट गई है।"

पते की बात

एक मैनेजमेन्ट ने मजदूरों को धमकी दी है कि आपस में बातचीत करते पाये जाते मजदूरों की गैरहाजरी लगा दी जायेगी। ड्युटी पर होने के बावजूद लगाई जाती इस प्रकार की अनुपस्थितियों की संख्या 4 होने वाले वरकरों का गेट रोक दिया जायेगा...

हमारी आपसी बातचीतों से मैनेजमेन्टें काँपती हैं। आओ खूब बातें करें — साहबों से पर्दे करके।

चाय कब ?

एक मैनेजिंग डायरेक्टर सुबह साढे नो बजे मजदूरों को चाय पीते देख कर आगबबूला हो गया। बड़े साहब ने आदेश दिया कि चाय साढे दस बजे दी जाये। चाय देते हैं ...के शरीरों को उत्तेजित कर नये सिरे से काम में झोंकने को...

हम चाय पीते हैं थोड़ा सुस्ताने और गपशप करने को।

सैकेन्डों की राजनीति

एक मैनेजमेन्ट ने फरमान जारी किया है कि हूटर बजने पर ही मजदूर हाथ धोयेंगे और कपड़े बदलेंगे। कोई वरकर हूटर बजने से पहले ऐसे करते पाये जायेंगे तो उनके एक घन्टे के पैसे काट लेंगे....

जबकि ... जबकि मात्र 15 मिनट काम करके मजदूर अपनी दिहाड़ी के बराबर प्रोडक्शन कर देते हैं। पन्द्रह मिनट के बाद हम जितना काम करते हैं वह साहबों के शोषणतन्त्र तथा दमनतन्त्र को बढाने के लिये इस्तेमाल होता है।

वाह !

पश्चिम बँगाल में टीटागढ स्थित जूट मिलों में तेलुगु भाषी मजदूरों की अच्छी-खासी संख्या है। टीटागढ में हाथ से लिख कर तेलुगु में एक पत्रिका निकलती है और फोटोकापी करके बाँटी जाती है। मजदूर यह स्वयं करते हैं।

डाक से पता :

मजदूर लाईब्रेरी
आटोपिन झुग्गी
एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001

एक बुजुर्ग वरकर :

"मजदूर अपना दुख-दर्द किससे कहें ? मुझे 28 साल हो गये नौकरी करते। ग्यारह घन्टे ड्युटी देता हूँ। आपको पता होना चाहिये कि पीयन तो पीयन होता है — हर बाबू काम बता देता है, यह करो वह करो। इन 1400 रुपयों के लिये दिन-भर जूठन धोता रहता हूँ। यदि मैं बोलूँ तो नौकरी से गया। यदि यूनियन बनाओ तो नेता बेच कर खा जायेंगे। प्रशासन में बैठे लोगों की तो फैक्ट्री से मन्थली बँधी हुई है। मजदूर जायें कहाँ ? जिन्दगी बहुत ही बेचैनी से बीत रही है। ये दुख किस हद तक बढेगा ? उम्र 50 साल की हो गई है।"

स्टर्लिंग टूल्स मजदूर :

" लन्च टाइम भी नहीं देते — मशीन चलाते-चलाते ही रोटी निगलनी पड़ती हैं। इस फैक्ट्री के अन्दर जाने का टाइम है, बाहर आने का नहीं। चार घन्टे तो ओवर टाइम के लिये हर रोज रोकते ही रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे भी डबल की बजाय सिंगल रेट से देते हैं।"

वन विभाग वरकर :

" परमानेन्ट करवाने के नाम पर 10-11 साल से कोर्ट केस चल रहा है। दस-ग्यारह साल काम करते हो गये थे जब यूनियन ने केस किया था। इस प्रकार 20-22 साल से कैजुअल हैं — जिन्दगी कैजुअल में कट गई। पहले मस्टरोल पर तनखा बनती थी पर अब बिल बनाते हैं। पहले हाजरी कार्ड मिलता था पर अब वह भी नहीं देते। फरीदाबाद में ही वन विभाग के इस प्रकार के 800-900 मजदूर हैं।"

' मजदूर समाचार ' में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, मजदूर लाइब्रेरी में आराम से बैठ कर बतायें।

अपनी बातें अन्य मजदूरों तक पहुँचाने के लिये ' मजदूर समाचार ' में भी छपवाइये। आपका नाम किसी को नहीं बतायेंगे और आपके कोई पैसे खर्च नहीं होंगे।

महीने में एक बार ही ' मजदूर समाचार' छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। किसी वजह से सड़क पर आपको नहीं मिले तो 10 तारीख के बाद मजदूर लाइब्रेरी आ कर ले सकते हैं — बोनस में कुछ गपशप भी हो जायेगी।

विकल्पों के लिये प्रश्न (3)

सुपरविजन-निरीक्षण-नियन्त्रण-कन्ट्रोल

दीवारें-काँटेदार तार-गेट-गार्ड-टाइम आफिस-सायरन-घड़ी-टोकन-कार्ड पंचिंग तो घेरे मात्र हैं। यह तो फैक्ट्री में प्रवेश करने देने तथा बाहर नहीं निकलने देने के बस औजार हैं। यह तो बाहरी नियन्त्रण के जरिये मात्र हैं।

निर्धारित उत्पादन की मात्रा, क्वालिटी का स्तर, अनुशासन और डिसिप्लिनरी एक्शन, इनसेन्टिव, इनक्रीमेन्ट, प्रमोशन के क्रियान्वयन के वास्ते विभिन्न विभाग फैक्ट्री के अन्दर कार्यरत रहते हैं।

सुपरविजन-निरीक्षण-नियन्त्रण-कन्ट्रोल सिर्फ फैक्ट्रियों की बपौती नहीं हैं। सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में इनका दबदबा है।

रिपोर्ट देना, कोर्स पूरा करना, रजिस्टर-फाइल में दर्ज करना, आडिट, विजिलेन्स..... कहाँ नहीं हैं ?

जकड़ और जकड़ के माध्यम वर्तमान में अन्तर्निहित हैं। वर्तमान के लड़खड़ाने के संग-संग यह अधिक व्यापक तथा पैने होते जा रहे हैं, किये जा रहे हैं।

— जिन कार्यों में नजर से दूर, चारदीवारी से बाहर चलना-फिरना पड़ता है उनमें जोते गये वरकरों को पेजर तथा सेल फोन की बेड़ियाँ पहनाई जा रही हैं।

— मनुष्य की निगाहों की सीमाओं के संग-संग मानव की कुदृष्टि की अविश्वसनीयता के दृष्टिगत जगह-जगह कैमरे लगाने और क्लोज सर्किट टी वी द्वारा चौबीसों घन्टे नजरों से बींधे रखने के उपाय किये जा रहे हैं।

— तत्काल और चप्पे-चप्पे पर निगाह रखने के लिये कम्प्युटरों तथा सैटेलाइटों का जाल फैलाया जा रहा है।

बीच-बीच में शोर मचाया जाता है कि सुपरविजन-निरीक्षण-नियन्त्रण-कन्ट्रोल कम हैं तथा इस वजह से परेशानियाँ हैं। अधिक सख्ती को मुक्तिदाता घोषित किया जाता है।

जबकि, सुपरविजन-निरीक्षण-नियन्त्रण-कन्ट्रोल का होना ही बुनियाद में गड़बड़ होने को इंगित करता है। इनका व्यापक तथा तीखे होते जाना तो वर्तमान के मानवद्रोही होने की तस्दीक मात्र है।

सुपरविजन-निरीक्षण-नियन्त्रण-कन्ट्रोल को खत्म करने की राहें ही विकल्पों के लिये प्रस्थान-बिन्दु हो सकती हैं। **(जारी)**

हरियाणा सचिवालय में सरकार ने कार्ड पंचिंग मशीनें लगवाई तो हफ्ते-भर में उन मशीनों की वह ठुकाई की गई कि मशीनें आउट ऑफ आर्डर हो गई। सरकार ने 30-40 कर्मचारियों के खिलाफ एक्शन लिया और दस लाख रुपये खर्च करके मशीनें रिपेयर करवाई। मरम्मत के तीन दिन के भीतर कार्ड पंचिंग मशीनें फिर नाकारा हो गई।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73